हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, कॉनिफर कैम्पस, पंथाघाटी, शिमला – 171013 (हि०प्र०)

"बांस उत्पादन, प्रबंधन एवं विपणन" विषय पर राष्ट्रीय बांस मिशन में बांस प्राविधिक सहायता समूह (बी०टी०एस०जी०) योजना के अंतर्गत किसानों के लि पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (5 से 9 सितम्बर, 2016) ।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, कॉनिफर कैम्पस, पंथाघाटी, शिमला द्वारा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के निर्देशानुसार हि०प्र० के किसानों के लिए बांस उत्पादन, प्रबंधन एवं विपणन विषय पर राष्ट्रीय बांस मिशन भारत सरकार, नई दिल्ली के बांस प्राविधिक सहायता समूह (बी०टी०एस०जी०) योजना के अंतर्गत पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के सभागार में 5 से 9 सितम्बर, 2016 को हिमाचल प्रदेश के किसानों को बांस कृषि को बढ़ावा देने के लिए किया गया । डा० राजेश शर्मा, वैज्ञानिक-एफ०, हि०व०अ०सं० ने 5 सितम्बर 2016 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया तथा पांच दिवसीय कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी । डा० के०एस० कपूर, समूह समन्वयक अनुसंधान, ने राष्ट्रीय बांस मिशन तथा देश में बांस प्राविधिक सहायता समूह के माध्यम से बांस उत्पादकता वृद्धि से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की । डा० वी०पी० तिवारी, निदेशक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए बांस के महत्व पर प्रकाश डाला तथा बांस के कृषिकरण में किसानों की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की । डा० तिवारी ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए किसानों से बढ़चढ़ कर भाग लेने का अनुरोध किया ।

प्रथम तकनीकी सत्र में डा० राजेश शर्मा, वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम समन्वयक ने बांस के महत्व एवं इसकी उपयोगगिता तथा संस्थान द्वारा बांस पर पूर्ण की गई अनुसंधान परियोजनाओं पर जानकारी दी । डा० विनीत जिष्टू ने अपने व्याख्यान में हि०प्र० की विभिन्न बांस प्रजातियों का वर्णन किया तथा उनके प्रमुख लक्ष्णों के द्वारा इनकी पहचान करने के बारे में जानकारी दी । श्री एस०पी० नेगी, वन अरण्यपाल तथा प्रमुख कृषि वानिकी तथा विस्तार प्रभाग हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने बांस उत्पाद एवं बांस कलम से मूल्य वृद्धि पर जानकारी प्रदान की । बांस एवं उसकी सामाजिक, आर्थिक महत्ता पर चर्चा के उपरांत परिषद् द्वारा बांस पर बनाए गए वृत चित्र को दर्शाया गया । डा० के०एस० कपूर ने हि०प्र० के संदर्भ में पहाड़ी बांस के पारिस्थितिक,

सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं पर चर्चा की । डा० कपूर ने किसानों की रोजमर्रा की जरूरतों की पूर्ति में पहाड़ी बांस की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा इस प्रजाति का राज्य के संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण में योगदान की चर्चा की । अगले दिन डा० संदीप शर्मा, वैज्ञानिक एवं प्रभाग प्रमुख ने बांस नर्सरी की स्थापना के तरीकों पर जानकारी दी । उन्होंने प्रतिभागियों को उच्च गुणवता वाले पौधरोपण सामग्री से बांस नर्सरी तैयार करने के बारे में जानकारी दी । उन्होंने चित्र प्रदर्शन से मैक्रो प्रोलिफिरेशन तकनीक के बारे में बताया तथा नर्सरी प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी । इसके उपरान्त श्री पी०एस० नेगी, वैज्ञानिक ने भण्डारण, जैवित्ता तथा बीज रोपण द्वारा उच्च गुणवता पौधरोपण सामग्री तैयार करने सम्बन्धित जानकारी साझा की ।

भोजन अवकाश के उपरांत श्री जगदीश सिंह, वैज्ञानिक ने कृषि वानिकी तथा बांस विषय पर चर्चा की । उन्होंने उच्च गुणवत्ता पौधरोपण सामग्री को काईक विधि से तैयार करने के बारे में बताया । डा० स्वर्णलता, वैज्ञानिक ने बांस उत्पादन एवं प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी । डा० रणजीत सिंह, वैज्ञानिक एवं प्रभाग प्रमुख वन बचाव ने बांस की फसल को कीटों से होने वाले नुकसान एवं उपचार पर जानकारी दी ।

तीसरे दिन श्री प्रदीप भारद्वाज, उप-अरण्यपाल ने बांस पर निर्भरता एवं आजिविका पर प्रकाश डाला । उन्होंने किसानों को बांस उत्पादन के अतिरिक्त बांस उत्पाद बनाने में कौशल प्राप्त करने पर जोर दिया । डा० वी०आर०आर० सिंहं, प्रधान मुख्य अरण्यपाल, वन विभाग हि०प्र० ने बांस वन प्रबंधन एवं नीति विषय पर जानकारी दी । उन्होंने किसानों के प्रश्नों एवं शंकाओं का निवारण किया तथा किसानों को बांस कृषिकरण की आधुनिक जानकारियों से अवगत करवाया तथा अपने खेतों में बांस उत्पादन को बढ़ावा देने का सुझाव दिया । श्री एस०एस० कटैक, भा०व०से०, उप-निदेशक भारतीय वन सर्वेक्षण, शिमला ने बांस के विभिन्न उपयोगों एवं क्षेत्र अनुभवों को किसानों के साथ साझा किया । श्री सुरेन्द्र कुमार, भा०व०से० (सेवानिवृत) ने बांस फसल प्रबन्धन विषय पर प्रस्तुति व्याख्यान दिया किसानों को बांस से सम्बन्धित परिवहन एवं विपणन समस्याओं पर सुझाव दिए । उन्होंने हि०प्र० विभाग द्वारा कियान्वित की जा रही पौधरोपण गतिविधियों पर जानकारी दी और स्थानीय समुदाय का इसके प्रबन्धन में भागीदारी पर जानकारी दी । डा० पवन कुमार, वैज्ञानिक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने बांस के कीटों से संबंधित रोगों तथा नर्सरी में लगने वाले रोगों एवं उपचार पर चर्चा की तथा किसानों की इससे संबंधित शंकाओं का निवारण किया । भोजन अवकाश के उपरांत पहाड़ी बांस एवं उनके उत्पादों पर एक वृतचित्र दिखाया गया ।

चौथे दिन श्री विनोद कुमार, अनुसंधान सहायक एवं श्री नीरज कुमार, परियोजना सहायक ने प्रतिभागियों को क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, शिलारू का दौरा करवाया तथा नारकण्डा में संस्थान द्वारा स्थापित बांस पौधरोपण क्षेत्र का दौरा करवाया ।

डा॰ रणजीत कुमार ने अंतिम दिन उत्तर पर्वीय क्षेत्र के अपने अनुभवों को प्रतिभागियों से सांझा किया तथा उत्तर पूर्वीय भारत एवं चीन बांस के विभिन्न उत्पादों के बारे में जानकारी दी । संस्थान के वैज्ञानिक डा॰ आर॰ के॰ वर्मा ने बांस के विभिन्न मुद्दों, उत्पाद एवं मूल्य वृद्धि तथा विभिन्न बांस उत्पादों की चित्र प्रस्तुति दी । डा॰ अश्वनी तपवाल ने बांस की बिमारियों के विभिन्न पहलुओं एवं उनकी रोकथाम पर व्याख्यान दिया । डा० तपवाल ने किसानों को फसलें में लगने वाली बिमारियों की समस्याओं की रोकथाम पर महत्वपूर्ण जानकारी दी । तकनीकी सत्र के उपरांत आम चर्चा में संस्थान के विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा उनकी समस्याओं का निवारण किया । किसानों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अपने विचार रखने को कहा गया जिसमें श्री प्रकाश चन्द एवं श्री होशियार सिंह ने औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र का दौरा करवाने का सुझाव दिया तथा उत्पाद तैयार करने एवं मूल्य वृद्धि पर व्यवहारिक प्रशिक्षण देने पर बल दिया । डा॰ के॰ एस॰ कपूर ने अन्त में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए और किसानों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में बढ़चढ कर भाग लेने के लिए धन्यवाद किया । उन्होनें बांस उत्पाद के व्यवहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के सुझाव को उच्च अधिकारियों के समक्ष रखने का आश्वासन दिया । प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन डा॰ संदीप शर्मा वैज्ञानिक के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां